सम्पादक की कलम से

शिक्षा नीति पर राजनैतिक गठबन्धन में शर्त

हमारे देश को आजाद होने के बाद बाबा साहेब अम्बेड़कर ने महात्मा जोतीराव फुले के आदर्शों की भाँति संविधान में शिक्षा के अधिकार को मूलभूत अधिकार में शामिल किया है। ऐसे में देश के प्रत्येक नागरिक को समान रूप से शिक्षा पाने का अवसर सरकारों को देने की प्रतिबद्धता होना ही चाहिए। आजादी के 74 वर्ष होने के बाद भी देश के लगभग 30 प्रतिशत् से अधिक नागरिक शिक्षा से वंचित है और लगभग 70 प्रतिशत् अर्धशिक्षित बने हुए हैं। इसका आशय सरकारों ने जो भी कार्य किये उनमें शिक्षा को प्राथमिकता से नहीं लिया गया, इसी कारण शिक्षा का हाल बेहाल बना हुआ है। इस पर आगे आकर मतदाताओं को राजनैतिक पार्टियां या उनके गठबन्धन से यह वादा कराना होगा कि वे अपने घोषणा पत्र में तथा गठबंधन के न्यूनतम कार्यक्रम में देश के नागरिकों को निशुल्क रोजगार मूलक शिक्षण–प्रशिक्षण के लिये नीतियां बनाना जरूरी होगा।

प्रायः राजनैतिक दल सत्ता पाने के लिये ऐन–केन– प्रकोरण साम–दाम–दण्ड–भेद, झूठे वादों के घोषणा–पत्र, प्रचार–प्रसार कर अपने उम्मीद्वारों को जिताने हेतु न्याय–अन्याय, धन बल बाहुबल का प्रयोग भी करते रहे है। मतदाता भी इन पार्टियों के नेताओं के झांसे में आकर उनके उम्मीद्वारों को विजयी बनाकर उनकी, उनके गठबंधनों की सरकारों का कड़वा–खट्टा–मीठा अनुभव लेते रहे हैं। मतदाताओं ने सभी राजनैतिक पार्टियों गठबन्धनों का कार्य देखा–परखा, समय–समय पर इनको सत्ता में बिठाते–हटाते रहे है। लेकिन जन आकांक्षाओं के अनुरूप विजयी उम्मीद्वार और सत्ता सिंहासन को संचालित करने वाली सरकारों ने परिणाम नहीं दिये। सभी सरकारों ने नीतियां बनाने वालों को स्थायी नहीं होने दिया अपनी सरकार बनने के बाद नीतिकारों को पलटते रहे, अपने कृपा–पात्रों को नीतिकार बनाते रहे। अब तक जितनी भी नीतियां स्वीकार हुई वे सरकारे पलटते ही नीतियां भी बदलने का प्रचलन चलता रहा। संविधान के मूलभूत अधिकारों की रक्षा करने, उन्हें नागरिकों को देने हेतु ठोस पहल ही नहीं की इस कारण अंधकार बनता रहा ।

हमारे संविधान में प्रदत्त अनिवार्य निशुल्क रोजगार मूलक शिक्षा का प्रावधान समय–समय पर होता रहा है। संविधान में 14वर्ष की आयु तक निशुल्क शिक्षा का प्रावधान 1960 में बनाया। वैसे प्रथम शिक्षा कमीशन 1950 में बनाया । प्रथम युनिवर्सिटी कमीशन1948 में सर्व चल्ली डॉ राधाकृष्ण ने कमीशन ने बनाया। दूसरा 1952 में ए. लक्ष्मणनिवास मुदलियार कमीश्न ने बना । तीसरा 1964. 66 में डी एस. कोठारी कमीशन बना और 1968 में नेशनल पालिसी इन ऐजुकेशन प्रभावशील की जिसमें आयु 6 से 14 वर्ष तक केविद्यार्थियों को प्राथमिक शिक्षा का प्रावधान किया। चौथी पालिसी 1979 में बनी। पाँचवी 1986 में बनी जिसमें अनुसूचित जाति–अनुसूचित जनजाति एवं ओबीसी के सभी विद्यार्थियों को शिक्षित करना था। छटवीं 1992 में आचार्य राममूर्ति की अध्यक्षता में आयोग बना । सातवी बार 2000.2001 में डॉ मुरली मनोहर जोशी मानव संसाधन मंत्री ने ''सर्वशिक्षा अभियान'' की नीति लागू की । आठवीं 2009में अनिवार्य शिक्षा अधिकार कानून बना और 1 अप्रैल 2010 से प्रभावशील किया। जिसमें 70 प्रतिशत् राशि केन्द्र एवं 30 प्रतिशत् राशि प्रदेश को वहन करना निर्धारित किया। 25 प्रतिशत् स्थान निजि स्थान स्कूलों में गरीब परिवार के विद्यार्थियों के लिये आरक्षित किया एवं कक्षा एक से आठ तक बालिका शिक्षा को अनिवार्य करने का प्रावधान रखा। इतना प्रयास होने के बाद भी देश के लगभग 30 प्रतिशत् नागरिक अशिक्षित है एवं 70प्रतिशत् अर्धशिक्षित होकर दर–दर की ठोकर रखा रहे हैं।याने जितने भी राजनैतिक दलों की सरकारें बनी उन्होंने संविधान के अनुरूप नागरिकों को शिक्षित करने पर ठोस पहल ही नहीं की।

वैसे देशों में पहली बार आम–आदमी पार्टी ने अपने दिल्ली के बजट से 23 प्रतिश्त राशि का प्रावधान किया व अब 2018.2020 के बजट प्रावधान को 26 प्रतिशत् कर देश में केजरीवाल सरकार ने उदाहरण प्रस्तुत कर शिक्षा की सुध लेना प्रारम्भ कर दिया है। इस माडल को केन्द्र एवं प्रदेश की सरकारों को अपनाने के लिए इनकी राजनैतिक पार्टियों के घोषणा पत्रों या संकल्प पत्रों में प्रावधान करने हेतु नागरिक पहल करें। यदि नागरिकों के प्रस्तावों को राजनैतिक पार्टियां या गठबन्धन जो सत्ता सम्हाले उन्हें संविधान की मूल भावना के अनूरूप शिक्षा के महत्तव पर नागरिकों को शिक्षित करने की नीति नहीं अपनाते उन्हें सबक सिखाना मतदाताओं का दायित्व होना चाहिए। प्रयास करने पर उन्हें यह स्वीकार कर रोजगार मूलक निशुल्क शिक्षा की व्यवस्था जरूरी है।

सामाजिक क्रान्ति के जनक महात्मा जोतीराव फुले ने स्वंय संर्घष कर शिक्षा प्राप्त की हन्टर कमीशन को ज्ञापन दिया और उन्होनें प्रत्येक मानव को शिक्षित होने का आव्हान किया स्वंय और पत्नि ने मिलकर 18 स्कूल खोले अपनी जो भी आय थी उसे शिक्षा पर खर्च करते रहे। उन्होनें रोजगार मूल निशुल्क अनिवार्य शिक्षा का मूलमंत्र मानव मात्र को दिया । उसी का परिणाम है कि हमारे संविधान में शिक्षा को मौलिक अधिकार में स्थान मिला।

अब समझते है कि इतना सब प्रावधान, कमीशन की रिर्पोट, शिक्षा नीतियां बनी, उन पर कुछ काम भी हुआ फिर भी देश के नागरिक शिक्षा से मोहताज क्यों हैं? वैसे शिक्षित परिवार तो सक्षम होने के कारण देश के संसाधन पर प्रथम अधिकार वह कर लेता है और आने वाली अपनी पीढ़ीयों को जरूरत के अनुसार धन खर्च करने की हैसियत होने से उसकी पीढ़ी शिक्षित होकर संसाधन पाने में सफल हो जाती है। किन्तु पर्याप्त धनन नहीं होने कारण देश के ग्रामीण क्षेत्र के बालक –बालिका, किसान–मजदूर की संतान, घुमंतु परिवार की संतान, शिक्षित ही नहीं हो पाती या अर्धशिक्षित रहकर जैसे–तैसे पेट भरने की जुगाड़ में ही जीवन बिता रही है। और कुछ तो अपराधी बनकर नारकीय जीवन जेलों में बिताने हेतु मजबूर हो जाती है। ऐसे धनहीन परिवारों को होने वाली सन्तानों को कैसे शिक्षित कर राष्ट्र के संसाधन का उपभोग करने हेतु समता से कैसे अधिकार सम्मत बनाया जाय। ऐसी शिक्षा नीति की प्रथम आवश्यकता है।

देश का नागरिक मोदी सरकार से शिक्षा नीति का आशा करता रहा, किन्तु पांच वर्ष में दो मानव संसाधन मंत्री भले ही बनाये, किन्तु निशुल्क रोजगार मूलक अनिवार्य शिक्षा की नीतियां नहीं बना सकी। यह चिंतनीय है।

अब चुनाव में राजनैतिक पाटियां इनके गठबन्धन सामने आने वाले है अन्य विषयों के साथ मतदाता यह प्रश्न भी करें कि आपकी शिक्षानीति संविधान के अनुसार बनाइये? यदि अब भी चूके तो फिर पांच साल हमारी जनरेशन पीछे चली जायगी। आइयें शिक्षा के लिये कुछ न कुछ जरूर करें।

– रामनारायण चौहान

महात्मा जोतीराव फुले का 192वाँ जन्म दिवस 11 अप्रैल

महात्मा फुले के आदर्शों का मानव समाज

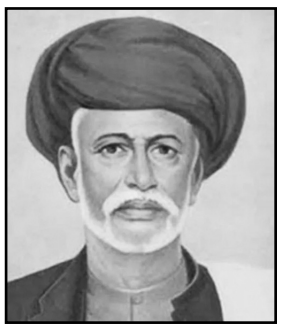

हमारे देश में महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, माटिन ल्यूथर किंग, गुरूनानक, संत कबीर, जैसे स्वप्न द्रष्टा समाज सुधारक हुऐ उन्हीं के उत्तराधिकारी सामाजिक क्रांति के जनक महात्मा जोतीराव फुले 11 अप्रैल 1827 को माली गोविन्दराव के यहाँ जन्म लिया। कहा जाता है कि "जैसी कथनी, वैसी करनी" के अनुसार चलने वाले सदियों में ही जन्म लेते है। क्रांति का मतलब 'आमूलचूल परिवर्तन की चिंगारी' जिसमें फुले ने समाज के पिछड़ो, शोषितों, दलितों पीड़ितो उपेक्षितो, तिरस्कृतों, वहिष्कृतों का व्रत लेकर उनका जीवन सुखी बनाने, शुद्र, अछूत एवं स्त्री जाति का उद्धार करने, शिक्षित करने में सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। कार्ल मार्क्स ने विश्व के मजदूरों का उद्धार का उद्घोष किया वहीं फुले ने मजदूरो के साथ किसानों, खेतीहरो के उद्धार के साथ तत्कालीन वैदिक सामाजिक असमानता की व्यवस्था में मानवता मय व्यवस्था की नींव रखने में योगदान दिया। महात्मा जोतीराव फुले का सम्पूर्ण जीवन संघर्ष पूर्ण रहा 1 वर्ष की आयु के पूर्व ही माता चिमना बाई का निधन के बाद मोसेरी बहन सगुणाबाई क्षीरसागर ने लालन पालन किया, 14 वर्ष की आयु में 9 वर्ष की सावित्री बाई से विवाह हुआ। तत्कालीन समय में शिक्षा–पिछड़ो–दलितो को पाने का अधिकार नहीं था, फुले की मोसेरी बहन जो एक अंग्रेज के यहाँ काम करती थी, उन्होने मिशनरी स्कूल में भर्ति करवाया, जिसका कड़ा विरोध होने के कारण पिता ने स्कूल भेजना बंद कर दिया। पुनः 14 वर्ष की आयु में स्टाकिश मिशन की अंग्रेजी पाठशाला में विरोध के बाद भी पढ़ने गये व 1847 में अंतिम कक्षा सातवीं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। अपने ब्राह्मण मित्र की बारात में निमंत्रण पाकर जाने पर अपमानित हुऐ।

शिक्षा को लेकर पिता ने घर से निकाला 1 भाई राजाराम एवं भाभी की प्रताड़ना सही। हत्या के प्रयासो को विफल किया। पत्नि सावित्री बाई शिक्षिका जब पढ़ाने स्कूल जाती आती थी, तो उनपर कीचड़ उछालना, गन्दी गालिया खाना अपमानित होने पर भी अपना लक्ष्य निभाया। पिछड़ी छोटी जाति के होने के कारण शिक्षा पाने, वेदशास्त्र, पुराणो को पढ़ने, सुनने से अधिकार विहीन होने के बाद भी संघर्ष कर शिक्षित हुऐ, व सभी धर्मग्रन्थो का अध्ययन किया। इस प्रकार फुले कठोर संघर्ष करते हुए अपनी राह पर आगे बढ़ने में सफल हुऐ। महात्मा फुले का जीवन, उनके साहित्य, उनके कार्यो का तत्कालीन समय में जो प्रभाव पड़ा उससे उनके अनेक अनुयायी, सहयोगी साथी सभी धर्मों, जातियों वर्गों के लोग थे, उनका सम्पूर्ण लेखन मराठी और अंग्रेजी भाषा में हुआ जिसका प्रकाशन भी हुआ। उनके साहित्य को पढ़कर समाज में व्याप्त अंधविश्वास कुरीतियाँ, जातिभेद, छुवाछूत (अश्पृस्यता), समान रूप से शिक्षा पाने का अधिकार, उन्होंने स्वयं मानव समाज को दिलाया। इसी का परिणाम है, कि महिलाओं को शिक्षापाने का अधिकार मिला, पुरूषो के समान काम धन्धा करने का अधिकार मिला, पिछड़ो को आरक्षण मिला। बाबा साहेब भीमराव अम्बेड़कर शिक्षित होकर बेरिस्टर बने, राजनेता बने, संविधान निर्माता बने, उन्होंने फुले को अपना गुरू माना। महात्मा गाँधी ने फुले द्वारा किये गये कार्यो को आदर्श मानकर अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। गांधी ने उन्हे असली महात्मा माना। जस्टिस रानाड़े ने प्रारम्भ में फुले के कार्यों का विरोध किया किन्तु उनकी बहन विधवा हुई तब फुले ने जो पुर्नविवाह प्रारंभ कराये थे, रानाड़े ने भी फुले के आदर्श अपनाकर बहन का जीवन साथी चुना एवं उनके द्वारा स्थापित सत्यशोधक समाज में कार्य किया। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ब्राह्मण होने के नाते फुले के अभियानों के विरोधि थे, किन्तु जब उन्हे जेल से बाहर निकालने हेतु फुले ने जमानत देकर आजाद कराने पर उनके अहसानमंद हो गये। वर्तमान में जो गैर ब्राह्मण समाज चाहे वे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, ओबीसी, मुस्लिम, जाति धर्म के लोगों ने महात्मा फुले की सामाजिक, शैक्षणिक क्रांति के कारण समतामय समाज के जो अधिकार प्राप्त किये, ये सभी लगभग 85 प्रतिशत आबादी फुले की ऋणी है।

महिलाओं पर गैर मानवीय प्रतिबन्ध लगे थे, विधवा विवाह, सतिप्रथा, विधवाओं को गर्भवति होने पर उनकी गर्भपात रोककर जन्म ले वाली सन्तानो का लालन पालन, शिक्षा पाने का अधिकार मिला। मजदूरो को मेद्याजी लोखण्डे के माध्यम से संगठित होकर ट्रेड युनियन अधिकार दिलाना कृषि अनुसंधान, जल संग्रह कर पीने एवं सिंचाई के लिये उपयोग में लेनाऐसे आदर्श फुले ने स्थापित किये। फिर समाज में व्याप्त कुरीतिया, रीति–रिवाज, फिजुल खर्चि, धार्मिक आड़म्बर, अंधविश्वास, शोषणमय नारकीय जीवन से छुटकारा दिलाने, साहित्य रचना करने का ऐसा उदाहरण फुले के अलावा इतिहास में मिलना कठिन है। छत्रपति शिवाजी महाराज की समाधि को रायगढ़ के किले में खोजकर उनको महिमा मंडित करने हेतु अमर पवाड़ा लिखकर फुले की आश्चर्य जनक देन है। फुले के आदर्शों का समाज आजादी के बाद बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर, जवाहरलाल नेहरू की डिस्कवरी ऑफ इंडिया, महात्मा गांधी के फुले वादी आदर्शों पर चलना, छत्रपति शाहू महराज द्वारा अपने राज्य में आरक्षण देना। पेरियार द्वारा फुले की जीवनी एवं कार्यों से समाज सुधार करना। काशीराम द्वारा बहुजनों को जागृत कर सत्ता एवं संगठन के लिये दबे, कुचले पिछड़े वर्गों को अधिकार सम्पन्न बनाना। अधिकार विहीन जातियों के लोगों को फुले के आदर्शों को समझकर उन्हें अपनाना। मानव समाज में सब को समानता से संगठन बनाने, सत्ता में भागीदारी करने समाज में जागृति लाने, महिलाओं को भी शिक्षित होकर पुरूषों के समान आगे बढ़ने जैसे आदर्श फुले की महान देन है। फुले दम्पत्ति को भारतरत्न पाने की सम्पूर्ण पात्रता है। महात्मा जोजीराव फुले का 28 नवम्बर 1890 को परिनिर्वाण हुआ। हम उनके आदर्शों को अपना कर असली मानवता का जीवन जी सकते है। जय–ज्योति – जय क्रांति

रामनारायण चौहान

सामाजिक चिंतन (भाग-22)

असंभव को सम्भव बनाने की ठानो

हमारे महापुरूषों का यह अनुभव है कि कोई सहज सरल काम तो चाहे जो कर सकता है। किन्तु असंभव कार्य को सम्भव बनाने के लिये तो बड़ा लक्ष्य निर्धारित कर प्रयत्न करने से प्रकृति की अमूल्य धरोहर को भी हासिल किया जा सकता है। वर्तमान जनरेशन भी प्रायः दो लक्ष्यों को अपनाती हैं। ऐसे लोग भी है जो चल रहा है, मिल रहा है, हो रहा है, करने वाले कर रहे है। दुनिया कितनी भी आगे बढ़ती जाये। इनको कोई परवाह नहीं होती व केवल खान–पान, पहनाव, रहन–सहन की जुगाड़ हो जाय उसी में उलझे रहते है। जबकि ऐसे लोग भी होते है। जो कुछ कर गुजरना चाहते है। इसके लिये असंभव को संभव बनाने हेतु सभी प्रकार की मुसीबतों का सामना करते हुए दुनियादारी की पर्वाह किये बिना। अपना लक्ष्य बनाकर उसे पाने के लिये जी तोड़ मेहनत करते रहते है। आर्थिक पक्ष की भी जुगाड़ कर लेते है और एक ऊँचा स्थान पाकर ही दम लेते है। ये लोग ही देश दुनिया को सब कुछ दिलाने में सफल होते है। असफल होते है। असफल होने पर कभी पछताते भी नहीं है। इस परिवेश में भी हमारे विद्वानों ने कहा है कि **''लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती। कोशिश करने वालों की। कभी हार नहीं होती। नन्ही चीटी जब दाना लेकर चढ़ती है। दीवारो पर सौ बार फिसलती है।। मन का विश्वास रगड़ में साहस आता है। चढ़ कर गिरना गिरकर चढ़ना कभी नहीं अखरता है।। मेहनत उनकी बेकार। नहीं होती। कोशिश करने वालो की हार नही होती।। डुबकियाँ सागर में गोताखोर लगाता है। जा.जा कर गहरे पानी में। खाली हाथ लौट आता है। मिलते नही सहज में मोती। गहरे पानी में। बढ़ता उत्साह दुगना इसी हैरानी में।। मुठ्ठी खाली उसकी हर बार नहीं होती। मेहनत करने वालो की कभी हार नहीं होती। असफलता एक चुनौती है। इसे स्वीकार करो। क्या कमी। रह गई देखो और सुधार करो।। जब तक सफल ना हो सुख चैन त्यागो तुम। संघर्षों का मैदान छोड़ मत मागो तुम।। बिना कुछ करें। कभी जय.जय कार नहीं होती। मेहनत करने वालो की कमी। हार नहीं होती ।।''**

असली जीवन जीने की कला भी यही होती है कि कभी हिम्मत मत हारो। और बड़ी से बड़ी सोंच बनाकर अपना लक्ष्य पाने के प्रयत्नो से पीछे हटने की आवश्यकता ही नहीं है। बढ़ते चलो.बढ़ते चलो।

एक उदाहरण से समझो। भारत वर्ष के सभी प्रदेशों में बिहार एक ऐसा प्रदेश है वहाँ के परिवारजन यह सोंचते है कि यदि परिवार में सन्तान ने जन्म लिया और पास पड़ोस के लोगो ने मुखिया से पूछा कि आप इस सन्तान को क्या बनाना चाहते है। तो उसका 'ख्वाब' सपना इस उत्तर में रहता है कि मैं इसे राष्ट्रपति बनाऊँगा। फिर प्रश्न आता है। कि राष्ट्रपति का तो एक ही पद होता है। यदि नहीं बना सके तो क्या करोगे। फिर उसका उत्तर होता है कि में तो इसे मिनिस्टर या मुख्यमंत्री नहीं बना सके तो. फिर उसका उत्तर होता है। यदि नहीं बना सका तो इसे कलेक्टर या एसपी तो जरूर ही बनाऊँगा। और उसका लक्ष्य पूरा करने हेतु प्रयत्न कर सफलता अर्जित कर लेता है। इसी कारण बड़े लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ने वालों की सन्तान देश में सबसे अधिक भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी बिहार के ही है। अब आप समझ लीजिये। यदि सभी अभिभावक यह धारणा बना लेवें। कि अपनी सन्तान को शिक्षित। उच्च शिक्षित। प्रशिक्षित करवा कर सबसे आगे की पंक्ति में खड़ा करने में सफल होने के लिये प्रयत्नशील रहेंगे। हम समझते है। प्रायः सामान्य रूप से अभिभावक। ऊँची उड़ान का सपना ही नहीं देख पाते है। इसी कारण उनकी सन्तान अशिक्षित या अर्धशिक्षित रहकर केवल दाल.रोटी की जुगाड़ तक ही सीमित रह पाती है। मेहनत मजदूरी कर पेट भरना ही इनका जीवन बना रहता है। यदि अभिभावक ऊँची उड़ान भरले और लक्ष्य बनाकर सन्तान को योग्य बनाने के लिये प्रयत्न जारी रखे। तो ऊँचे से ऊँचे स्थान पर पहुँचने में सफल हो सकते है। हमारे समाजजन भी अपना चिंतन करें। कि हम भी अपनी सन्तान को अधिक से अधिक शिक्षित.प्रशिक्षित। उच्च शिक्षित करने हेतु अपनी पूरी क्षमता लगाकर संतान का उज्ज्वल भविष्य बनाने हेतु पहल करना प्रारम्भ करें। सफलता अवश्य मिलेगी। हम दुसरों की आलोचना करना छोड़ देवे व उनकी तरक्की पर पश्चाताप करना बन्द करें। अपना.अपने परिवार को अपने समाज को अपने राष्ट्र को आगे बढ़ाने हेतु प्रयास जारी रखें। सफलता अवश्य मिलेगी। हमारे महापुरूष सामाजिक क्रांति के जनक महात्मा जोतीराव फुले। प्रथम शिक्षिका सावित्री बाई फुले। बाबा साहेब भीमराव अम्बेड़कर। महात्मा गाँधी ने दूरगामी सौंच बनाकर कठिन चुनौतियों का सामना कर क्रांतिकारी बदलाव ला दिये। हम भी सब कुछ पा सकते है। असंभव को सम्भव बनाने की ठान लें। यह प्रकृति आपको सदा साथ देकर लक्ष्य पूरा करने में सहायक ही रहेगी। आइये कुछ न कुछ अच्छा करने हेतु आगे बढ़े।

रामनारायण चौहान

आपसी बात

शिक्षा इशारा अब यह कालम इसलिये बना रहा है कि देश के अनेक भागों से मोबाइल/फोन पर बातचित होती है इसका रिकार्ड भी रखना फर्ज समझ रहा है। तो आइये मो. 09990952171 या फोन नं.01145082626 पर हमारे कार्यालय में जो भी बातचीत होगी उसके अंश प्रकाशित होते रहेंगें।

माह - फरवरी से मार्च 2019

● मध्यप्रदेश– जगदीश सैनी (जबलपुर), राजेश दौड़के (छिंदवाड़ा), सुरेश सुमन (ब्यावरा), यादवलाल चौहान (इन्दौर), लीलाधर धारवे, गजानन्द रामी, सत्यनारायण चौहान पार्षद, सुरेन्द्र सांखला, (उज्जैन), एड़. पी.सी. हारोड़े, डॉ रामकिशन माली, किशोर सोलंकी (देवास), जी.पी.माली, मधु अम्बाड़कर, राजेन्द्र अम्बाड़कर, डॉ. प्रेमलता सैनी, अविनाश फसाटे रामचरण माने, जगदीश सोलंकी, गजानंद भाटी (भोपाल), लोकेश वर्मा (महू), मंगला अम्बाड़कर (सौसंर) पुरूषोत्तम अनुरागी (सतना) बसंत चावड़ा (भरौसा), ।

● बिहार– गौरीशंकर प्रसाद (पहलेजा), मदनभक्त (कटिहार–आरा)।

● महाराष्ट्र– डॉ. के. एस. यावलकर (नागपुर) शंकरराव लिंगे (सोलापुर), डी.के माली (ठाणे), शिवदास महाजन (पुणे), उज्जवल श्रीखण्डे (अमरावती), मंगला मधुकर रोकड़े, दुर्गाताई भाटी (धुले), राजेन्द्र सैनी (मुम्बई), ।

● उत्तरप्रदेश– श्रीचन्द सैनी (मेरठ), नारायण सिंह कुशवाहा (आगरा), संजय श्रीमाली (इलाहबाद), राजबहादुर सैनी (अमरोहा)।

● राजस्थान– नटवरलाल माली (बांसवाड़ा), मंगलसिंह सैनी (लाखेरी), बुधसिंह सैनी, पूनमचन्द कच्छावा (जयपुर), सुन्दर मामा (व्यावरा)।

● छत्तीसगढ़– हरीश पटेल(बालोद), राजेन्द्र नायक, एम.एल. सैनी (रायपुर)।

● दिल्ली– जी.एल. सैनी, चौ.इन्द्रराजसिंह सैनी, खुशीराम सैनी, जे.पी. सैनी, रमेश कुमार सैनी, के.पी. सिंह, सी.ए., एड. रमेश सैनी, दयाराम सैनी ।

● हरियाणा– के.सी.सैनी (गुड़गांव) ।

● गुजरात / गंगाराम गेहलोत (अहमदाबाद)।

● चण्डीगढ़– सतपाल सैनी ।

● पंजाब– हरजीत सिंह लोंगिया (रोपड़) ।

महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान

ए-103, ताज अपार्टमेन्ट्स, गाजीपुर, दिल्ली -110096
फोन/फैक्स नं. 011-45082626, मो. : 09990952171
E-mail: phuleshikshansansthan@gmail.com Web: www.phuleshikshansansthan.org.

सत्यमेव जयते

आजीवन सदस्यता फॉर्म

मैं महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान का आजीवन सदस्य बनना चाहता हूँ/चाहती हूँ।
मैं अपनी आजीवन सदस्यता राशि रु. 3000/- शिक्षादान की राशि रु. 11000/-स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, रोहिणी कोर्ट ब्रांच, दिल्ली, IFSC कोड नं. SBIN/0010323 के करन्ट एकाउंट नं. 32240494101 में जमा कर काउन्टर स्लिप संलग्न कर रहा/रही हूँ।

मेरी जानकारी निम्नानुसार है :-

1. नाम _____
2. पिता/पति का नाम _____
3. जन्म तिथि _____ 4. ब्लड ग्रुप _____
5. शिक्षा _____
6. व्यवसाय _____
7. वोटर कार्ड नं. _____ 8. ड्राईविंग लाइसेंस नं. _____
9. आयकर पेन कार्ड नं. _____ 10. आधार कार्ड नं. _____
11. स्थायी पता _____
पिन कोड _____
12. पत्र व्यवहार का पता _____
पिन कोड _____
13. फोन/फैक्स नं. _____ 14. मोबाईल नं. _____
15. ई-मेल _____

Passport Size Photo

दिनांक: प्रभारी के हस्ताक्षर (कोड नं.) आजीवन सदस्य के हस्ताक्षर

कार्यालय उपयोग हेतु

श्री..... ने रसीद नं. ..... दिनांक ..... से रु. 3000/- जमा करा दिए है।

सदस्यता कोड नं.: आजीवन सदस्यता प्रदान की जाती है। अध्यक्ष कोषाध्यक्ष

फार्म नंबर-4 (नियमावली-8)

शिक्षा ईशारा

1. प्रकाशन का स्थान	जी–9 हर्ष काम्प्लेक्स, एलएससी, गाजीपुर, दिल्ली–110096
2. प्रकाशन की अवधि	मासिक
3. मुद्रक का नाम	रामनारायण चौहान महासचिव महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान
4. राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	जी–9 हर्ष काम्प्लेक्स, एलएससी, गाजीपुर, दिल्ली–110096
5. सम्पादक का नाम	रामनारायण चौहान महासचिव महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान
राष्ट्रीयता	भारतीय
पता	जी–9 हर्ष काम्प्लेक्स, एलएससी, गाजीपुर, दिल्ली–110096

उन व्यक्तियों के नाम और पते जो समाचार पत्र के स्वामी और हिस्सेदार हैं व एक प्रतिशत पूंजी से अधिक के शेयर होल्डर हैं।

रामनारायण चौहान महासचिव महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान
जी–9 हर्ष काम्प्लेक्स, एलएससी, गाजीपुर, दिल्ली–110096

मैं रामनारायण चौहान महासचिव महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान एवद् द्वारा घोषणा करता हूं कि ऊपर दिया गया समस्त विवरण मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार पूर्ण सत्य है।

हस्ताक्षर
रामनारायण चौहान महासचिव महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान

From: Pre. Month

A FORGOTTEN LIBERATIOR, THE LIFE AND STRUGGLE OF SAVITRI BAI PHULE

BY:- BRIJ RANJAN MANI & PAMELA SARDAR

Nationalism enabled the aggressive castes to project the Vedic-brahmanic culture and consciousness as the basis of Indianness. Their selfish ideals and interests became the national ideals and interests. Despite a variety of formulation-from the nineteenth century pioneers of socio-cultural regeneration such as Rammohun Roy, Dayananda, Vivekananda, to the rightist and leftist leaders of the Indian National Congress like Tilak, Gandhi, Nehru- the common denominator and trajectory of all of them was to selectively accommodate modernity within the traditional caste-class structure, thus maintaining the high caste privileges and dominance over the masses. The most successful, in concocting this brahmanical synthesis of continuity with change, was Gandhi who deftly straddled the worlds of politics and religion, playing the double role of a half-naked saint and a ruthless politician working at the behest of the rich and the powerful. The wily Brahmans and allied castes knew the value of Gandhi from the very beginning. They gratefully handed Gandhi the supreme leadership and put him on a pedestal so high that his real face remained invisible to the masses who mistook him for their Mahatma (ibid.).

It was this monolithic-brahmanic nationalism that came under frontal attack from leaders of the lower orders, the founders of anti-caste or non-brahman movements that erupted in many parts of the subcontinent during the colonial period. Aligning themselves with the long non-brahmanic tradition of resistance for equality and freedom of all they argued that the brahmanic religio-social system was more sinister than British colonialism, and therefore its annihilation must constitute an integral part of nation building.

Notwithstanding the multiplicity and diversity of articulations depending on time, space and regional variations, what the anti-caste leaders unmistakably stressed and struggled for, was social justice and social democracy. They fought pitched battles for doing away with caste and social justice and social democracy. They fought pitched battles for doing away with caste and social barriers. They took to the streets for civil and human rights of the caste-oppressed. They stood for a new society based on non-brahmanic and democratic values. These leaders who struggled for the deconstruction of brahmanism and demanded socio-cultural reconstruction have been dismissed in the dominant discourse as sectarian, caste representatives, while those who variously defended Brahmanism under the fig leaf of cultural nationalism are glorified as national leaders of vision and integrity (Mani 2005).

Jotirao Phule, and his wife Savitribai, were the first in modern India to declare war on brahmanic- casteist culture and religion. This Maharashtrain couple Presented the first major anti-caste ideology and led a mass activism against the ascriptive norms and values. Their distinct brand of socio-cultural radicalism was based on uniting all the oppressed, whom they would call stree-shudra-atishudra. (Literally, stree means women, shudra is productive servile caste at the bottom) of the caste hierarchy, and atishudra means 'those beyond the shudras', earlier despised as outcastes, or untouchables. In contemporary language, shudras and ati-shudras are other backward classes and dalits, respectively. But phules included in their notion of the oppressed, other marginalised groups as well such as adivasis and Muslims.)

Cont. Next Month

प्रेरणा श्रोत, प्रातः स्मरणीय हमारे पूर्वज (महामना फूले-बाबा साहब डा0 अम्बेडकर)

'अस्तित्व का नियम है कि जो अपने ही लिये जीता है वह क्षुद्र, पशुवत जीवन जीता है जो दूसरों के लिए जीता है वह ध्रुव तारे की भांति अलग चमकता है" आज हम महामना फूले (11.4.1827–28.11.1890) एवं बाबा साहब अम्बेडकर की (14.4.1891–6.12.1956) के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की चर्चा उनके जन्म माह के अवसर पर करने जा रहे हैं। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुआयामी (Multidimensional) है संक्षेप में कहने पर बहुत कुछ अनकहा रह जायेगा फिर भी निम्न पंक्तियां सार स्वरूप में शायद उन गुरु–शिष्य (महामना फूल–डा0 अम्बेडकर) पर खूब जंचती हैं। 'खुद ही अपने जख्म सियेंगे, पीड़ा मृत के घूट पियेंगे तुम जी लो मरने से पहले, हम मरने के बाद जियेंगे सत्य है कि महामना फूले एवं बाबा साहब डा0 अम्बेडकर ने अपना सम्पूर्ण वर्तमान आने वाली बहुजन पीढ़ी को स्वर्णिम बनाने के लिए कुर्बान कर दिया। दोनों क्रान्ति महापुरुषों का महाराष्ट्र में जन्म लेने के कारण ही राष्ट्र के अन्दर महाराष्ट्र है। समाज सुधार का कार्य इससे पूर्व दूसरों ने भी चलाया जैसे सती प्रथा हेतु राजा राममोहन राय, प्रार्थना समाज के केशव प्रसाद सेन, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, महादेव गोविन्द रानाडे आदि परन्तु जो त्वरा क्रान्ति की महामना फूले एवं बाबा साहब में दिखाई पड़ती है वह दूसरों में नहीं थी क्योंकि इन समाज सुधारकों को स्वयं अपमान नहीं झेलना पड़ा था क्योंकि ये सब उच्च वर्ण से सम्बन्धित थे। दोनों ही महापुरुषों ने शिक्षा पर जोर देकर बताया कि शिक्षा ही जीवन की मास्टर कुंजी है जहां 1848 में महामना फूले ने पहला स्कूल स्त्री शिक्षा एवं बहुजन शिक्षा हेतु पूना में खोला तो वहीं बाबा साहब ने भी 1950 में "मिलिन्द महाविद्यालय" महाराष्ट्र के औरंगाबाद शहर में खोला। यहाँ मिलिन्द के बारे में इंगित करना है कि मिलिन्द एक यूनानी राजा थे जो तक्षशिला के क्षेत्र में राज्य करते थे उन्होंने नागसेन नामक बौद्ध से शास्त्रार्थ किया था।

दोनों ही समाज सुधारकों ने बहुजन समाज के उस आदमी के लिए लड़ाई लड़ी जो पंक्ति में अन्तिम व्यक्ति था। महामना फूले ने इसी कारण जून 1873 में गुलामी नामक पुस्तक लिखी एवं 24 सितम्बर 1873 को सत्य शोधक समाज नामक संस्था की नींव रखी। इस संस्था का लक्ष्य था शहर से गाँव तक सभी बहुजनों को अन्धविश्वास, पाखण्ड से मुक्त कर वैज्ञानिक सोच का बनाया जाय। उसी प्रकार बाबा साहब ने 1951 में भारतीय बौद्ध जनसंघ एवं 1955 में भारतीय बौद्ध महासभा की स्थापना की थी ताकि बहुजन समाज (शूद्र) को ब्राम्हणी मकड़जाल से मुक्त कराया जा सके। दोनों ही महापुरुष मानव उत्थान के लिए वेद पुराण को व्यर्थ मानते थे क्योंकि उसमें स्वयं को अच्छा बनाने के लिये विधि नहीं है केवल पूजा पाठ का बढ़ावा है ताकि ब्राम्हण की आय में वृद्धि हो सके, क्योंकि पूजा का अधिकार केवल ब्राम्हणों को ही था। दोनों ही महापुरुषों पर पश्चिमी विचारकों का प्रभाव था। महामना फूले पर थामस पेन एवं स्टुअर्ट मिल, कार्ल मार्क्स के प्रभाव के कारण ही वे मानववादी, नारी सम्मान के प्रदाता बन सके। मानव वाद के लिए महामना फूले ने लकवा ग्रस्त होने के बाद 1888 में बायें हाथ से "सार्वजनिक सत्य धर्म" नामक पुस्तक लिखी थी। पुस्तक बताती है कि कैसे हर मानव प्राणी के मध्य समता, मानवता स्थापित की जाय। नशा–शराब के दोनों ही विरोधी थे। महामना फूले ने गुलामी के बाद किसान का कोड़ा 18.7.1883 को लिखी, ब्राम्हणों की चालाकी, जाति भेद विवेकसार, शिवाजी का पावड़ा तथा इशारा पुस्तक की रचना 1.10.1985 को पूरी हुई। बाबा साहब ने अधिक शिक्षित होकर अनेकों किताबें लिखीं, अछूत कौन और कैसे, शूद्रों की खोज, कांग्रेस गान्धी ने अछूतों के लिए क्या किया, हिन्दू धर्म की रिडिल (पहेली), प्राचीन भारत में क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति, भारत में जातियां, बुद्ध और उनका धम्म, मृत्यु से 3 दिन पूर्व तक लिखी गयीं 6 दिसम्बर 1956 में परिनिर्वाण हुआ)। महामना फूले जुझारू थे तभी तो सनातनी ब्राम्हणों के विरोध के बावजूद पूना में आर्य समाज के दयानन्द सरस्वती को जुलूस निकलवाने में सहायता की।

बाबा साहब ने 1927 में चावदार तालाब तथा 1930 में नासिक स्थित कालाराम मन्दिर में दलित निषेध के विरोध में उग्र आन्दोलन कर उन्हें प्रवेश दिलवाया। 14 अक्टूबर 1956 को जब बौद्ध धर्म स्वीकार किया तो उन्होंने 22 प्रतिज्ञाओं को भी जोड़ा जो कि त्रिपिटक (बौद्ध साहित्य) से बाहर की बाते हैं परन्तु ये प्रतिज्ञायें देशकाल परिस्थिति के अनुसार अति उपयोगी हैंदोनों की कोई पद लालसा नहीं थी। 1885 में कांग्रेस की स्थापना पर महामना फूले उसमें शामिल नहीं हुए क्योंकि वे जानते थे कांग्रेस से जुड़ने से व्यक्तिगत लाभ तो हो सकता है जो इन्हें प्रिय न था उनका मानना था कि सार्वजनिक सेवा ही धर्म है। लोगों को गुण दोष के आधार पर देखते थे वर्ण, कुल के आधार पर नहीं। विधवा ब्राम्हणी (काशीबाई) के पुत्र यशवन्त को अपना दत्तक पुत्र बनाया, उन्हें चिन्ता नहीं थी कि लोग क्या कहेंगे (L-K-K-) क्योंकि उनमें MBA (मुझे बहुत आता है का विकार टपतने नहीं था) बाबा साहब अपने पुत्र की मृत्यु पर व्यस्तता के कारण न जा सके थे तब उन्होंने कहा था मैं एक पुत्र के लिए रोऊँ या करोड़ों जीवित पुत्रों के लिए कार्य करूं ताकि आगे उन्हें रोना न पड़े। उन्होंने नेहरू मंत्रिमण्डल से 1951 में त्याग पत्र इसलिए दे दिया क्योंकि ब्राम्हणों के दबाव में आकर नेहरू जी नारी उत्थान हेतु "हिन्दू कोड बिल लागू नहीं कर रहे थे तथा ओ.बी.सी. के हित के लिए कमीशन नहीं बना रहे थे। दोनों ही समाज सुधारकों ने सामाजिक तिरस्कार को झेला, महामना फूले ने अपने ब्राम्हण मित्र की शादी में तो बाबा साहब ने तो विद्यार्थी जीवन से लेकर बड़ौदा में उच्च पद पर होकर भी अपमान झेला। उन्हें नल नहीं छूने दिया जाता था। फाइलें फेंक कर दी जाती थीं। दोनों ही हमारे प्रेरणा श्रोत पूर्वजों ने ग्रामीण आबादी के विकास के लिए बहुत काम किया। फूले का जल प्रबंधन पर कार्य किया गया होता तो महाराष्ट्र की कृषि सुधर जाती, किसानों को आत्महत्या न करनी पड़ती। उन्होंने समझ लिया था। 'कहां शान्ति है,

सुख कहां मन में भरे विकार
कर्म काण्ड पाखण्ड से हुई न नैया पार

11 अप्रैल 1827 को जन्मे महामना फूले का 28 नवम्बर 1890 को महामना फूले का परिनिर्वाण दिवस हुआ तो बाबा साहब डा0 अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को हुआ एवं परिनिर्वाण 6 दिसम्बर 1956 को हुआ परन्तु इससे केवल उनका शरीर नष्ट हुआ विचार तो आज भी जीवित हैं और रहेगा किसी ने ठीक ही कहा है

जब तक सूरज चांद रहेगा
फूले अम्बेडकर नाम रहेगा।"

अन्त में कहना है कि 2019 वर्ष विशिष्ट वर्ष है परन्तु यह अप्रैल माह क्रान्ति पुरुषों का जयन्ती माह होने के कारण अति विशिष्ट है। अन्त में उनके उपरोक्त वृत्तान्त से स्मरण होता है –

सपने वे नहीं होते जो रात में देखे जाते
सपने वे होते हैं जो हमें सोने नहीं देते।
अपने वे नहीं होते जो रोने पर आते,
अपने वे होते हैं जो हमें रोने नहीं देते।

संकल्प :– महामना फूले, बाबा साहब डा0 अम्बेडकर का सपना पूरा करने करने के लिए अपना तन, मन, धन क्षमता के अनुसार हम लगायेंगे ताकि देश में समता, मानवता स्थापित हो एवं पाखण्ड, अन्धविश्वास के स्थान पर वैज्ञानिक सोच विकसित हो।

एस0बी0 सैनी (B.E.)
पूर्व मण्डल अभियन्ता BSNL
महामंत्री पंचशील सोसाइटी कानपुर
मो0: 9415407576

देश भर के समाचार

● तुमसर (महा.)– महात्मा ज्योतिबा फुले बहुउद्देश्य विकास मण्डल माली समाज द्वारा 14 अप्रैल को माली समाज सभा गृह डोंगरला में सामूहिक विवाह समारोह विवाह समारोह। सम्पर्क नामदेव काम्बले 9860495978 शंकर गिड़कर 992230254।

● श्योपुर (म.प्र.)– युवा महासभा (माली सैनी–कुशवाहा) सयोजन समिति द्वारा 17 मार्च को शिक्षा जाग्रति सम्मेलन को डा. हनुमान सुमन, पुष्पेन्द्र कुशवाह काडूमल सुमन, कमलेश सुमन ने सम्बोधित किया। उक्त जानकारी मुकेश सुमन ने दी।

● रूढ़की (उ.ख.)– उत्तराखण्ड सरकार ने डा. कल्पना सैनी को अध्यक्ष ओबीसी कमीशन बनाने पर हार्दिक शुभकामनायें।

● पुष्कर –अखिल भारतीय माली सेवा सदन संस्थान का समाज सेवी उकाराम कच्छावा को निर्विरोध अध्यक्ष बनाये गये। इस अवसर पर मोतीबाबा फुले, ताराचन्द गहलोत, मांगीलाल पंवार, सेवाराम दग्धि, गीता सोंलकी, मिश्रीलाल सोलंकी सहित समाज प्रतिनिधि उपस्थित थे।

● हरियाणा– समाज सेवी राजनेता जवाहर सैनी को वन विकास निगम का अध्यक्ष बनाने जाने पर बधाई।

● बिलासपुर(छग.)– महिला छात्रा आई. टी. आई. प्रशिक्षण केन्द्र कोनी में श्रीमती भारती नीरज माली के मुख्य अतिथि में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया । उक्त जानकारी कन्हैयालाल माली वरिष्ठ उपाध्यक्ष ने दी।

● किरनापुर (म.प्र.)– महात्मा ज्योतिबा फुले समिति द्वारा सावित्रीबाई फुले एवं महात्मा ज्योतिबा फुले की प्रतिमा अनावरण, सिवनी आमगांव रोड़ चौक किरनापुर जिला बालाघाट में 10 मार्च को हुआ ।

● जयपुर (राज.)– 8 मार्च को माली (सैनी) समाज द्वारा 26वाँ 25 जोड़ो का सामूहिक विवाह समारोह हुआ। उक्त जानकारी ओम राजोरिया अध्यक्ष ने देते हुए बताया कि इस अवसर पर समाज की प्रतिभावों का सम्मान किया।

● जोधपुर (राज.)– माली सैनी समाज ने **RAS, IAS** करने हेतु निशुल्क ट्रेनिंग केन्द्र प्रारम्भ किया। सम्पर्क बी.एल. भाटी 9828503354।

● नदबई भरतपुर (राज.)– 8 मार्च को सैनी सेवा समिति द्वारा सामूहिक विवाह । प्रेमसिंह सैनी अध्यक्ष वेद प्रकाश सैनी सचिव ने उक्त जानकारी दी।

● देवास (म.प्र.)– श्री गुजराती रामी माली समाज द्वारा 24 वाँ सामूहिक सम्मेलन 7 मई। सम्पर्क मनोहर रघुनाथ जाधव 9826581968 ।

● नागपूर (महा.)– अ.भा माली महासंघ नगर शाखा द्वारा 1/8 मार्च को अर्न्तराष्ट्रीय महिला दिवस 2/10 मार्च को सावित्री बाई फुले पुण्यतीथि 3/11 अप्रैल तक फुले अम्बेड़कर जंयति सप्ताह पर विभिन्न आयोजन करने का निर्णय मधुसूदन देशमुख, गोविंद वैराले, प्रा. अरविन्द माली, कैलाश जामगड़े, बंसुधाताई येनकर, विणाताई बंड द्वारा प्रस्तावित किया।

● बुलडाणा (महा.)– आ.भा. माली महासंघ द्वारा 4 मार्च को नव निर्वाचित पदाधिकारियों का शासकिय विश्राम भवन में आयोजित कार्यक्रम में सरकार समारोह । उक्त जानकारी रमेश हीरलकर द्वारा दी गई। विधायक बलीराम सिरसकर राष्ट्रीय अध्यक्ष शंकरराव लिंगे महादेवराव घोसे, किरणाताई गिहे, प्रभाकर सातव, गौतमक्षीर सागर, गोविंद वैराले आदि पदाधिकारी उपस्थित थे।

● सोलापुर (महा.)– 3 मार्च को शंकरराव लिंगे की अध्यक्षता में आयोजित मिटिंग में अप्रैल में सर्वशाखीय वर–वधु परिचय सम्मेलन करने की रूप रेखा बनी ।

● सासाराम (बिहार)–हाई कोर्ट के निर्णय अनुसार निजि विद्यालयों द्वारा गर्मी की छुट्टीयों में विद्यार्थियों से 2 माह की फीस लेने पर रोक लगा दी है। आदेश क्र. सीपी न. 5812/2015 S.O(G-3) SE-2L/P.S/H.S/3-859118 Date -5 March 2018. इस निर्णय से अभिभावको को आर्थिक राहत मिल गई है।

● मन्देवर यमुनानगर (हरि.)– सैनी समाज की मिटिंग में पंजाब के अध्यक्ष हरजित सिंह लोंगिया, अध्यक्ष सैनी सभा एवं तरलोचन सिंह सैनी एडवोकेट आदि उपस्थित थे।

● गुड़गांव (हरि.)– आलॅ इण्डिया सैनी सेवा समाज की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की मिटिंग दिलबागसिंह सैनी की अध्यक्षता में निर्णय लिया कि 19 मई को आम सभा दिल्ली में होगी जिसमें पदाधिकारियों के चुनाव होंगे।

● मेहसाणा (गुज.)– पाटन श्री रामी माली समाज द्वारा 20वाँ सामूहिक विवाह सम्मेलन 3 मार्च में 11 जोड़ो का । उक्त जानकारी रामी जयदीप ने दी।

● पनेवल (महा.)– महात्मा फुले सामाजिक शिक्षण संस्थान के पूर्व अध्यक्ष शंकरराव लिंगे ने 7 मार्च को आयोजित कार्यक्रम में बोलते हुए शिक्षा का महत्व समझाया।

● बस्सी जयपुर (राज.)– माली समाज विकास संस्थान द्वारा चतुर्थ सामूहिक विवाह सम्मेलन में 51 जोड़ो का 8 मार्च को विवाह हुआ।

● इन्दौर (म.प्र.)– संत सिंगाजी मित्र मंडल द्वारा 17 मार्च को माली समाज का परिचय सम्मेलन सम्पन्न उक्त जानकारी अशोक मालाकार ने दी ।

● बीजनौर (उप्र.)– जसवंतसिंह सैनी को पिछड़ा वर्ग आयोग का उपाध्यक्ष बनने पर बधाई।

● रेवाड़ी (हरि.)– अन्तराष्ट्रीय सैनी समाज के अध्यक्ष पवन कुमार सैनी ने नव नियुक्त पदाधिकारियों का स्वागत किया।

● गुरूग्राम (हरि.)– अबुधाबी में खेले गये स्पेशल वर्ल्ड गोल्फ गेम्स 2019 में रणवीरसिंह सैनी ने टीम इंवेंट में रजत पदम जीता।

● दिल्ली– भारतीय क्रिकेट टीम में नवदीप सैनी को शामिल करने पर बधाई ।

● जांजगीर चांपा (छग.)– सांस्कृतिक भवन में नारायण सैनी वरिष्ठ उपाध्यक्ष मनोज सैनी अध्यक्ष श्रीमती भारती माली प्रदेश अध्यक्ष तथा लक्ष्मी सैनी, जॉन पिन्टू, बाल गोविन्द माली जांजगीर चांपा, विनोद माली शहडोल, दिलीप सैनी सागर दुर्ग, रवि भगत एड. आदि ने महात्मा फुले एवं सावित्रीबाई फुले के चित्र पर माल्यापर्ण किया। व उनके आदर्शों पर चलाने का संकल्प लिया।

● आगर (म.प्र.)– 7 मई को फूल माली समाज द्वारा 18 वाँ सामूहिक विवाह समारोह।

● हॉसी (हरियाणा)– श्री राजबीर सैनी डिप्टी एस.पी. ने समाजजनों को होली पर शुभकामना दी।

● अठनेरा बून्दी (राज.)– 7 मई को श्री फूल माली समाज का आठवाँ सामूहिक विवाह सम्मेलन।

● सवाई माद्योपुर (राज.)– सैनी माली विकास संस्थान द्वारा 7 मई को सैनी छात्रावास में सामूहिक विवाह सम्मेलन।

● पेहवा (हरि.)– हरियाणा के मंत्री नायब सैनी विधायक पवन सैनी, डी.एस.पी. गुरमेल सैनी, डी.एस.पी. तरूण सैनी, सैनी समाज प्रधान गुरूनाम सैनी, राजेश सैनी, नरेश सैनी, मुकेश सैनी की उपस्थिति में सामाजिक समारोह 23 मार्च को हुआ।

● गुरूग्राम(हरि.)– ऑल इंडिया सैनी सेवा समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष दिलबाग सिंह सैनी ने परिवार मिलन एवं वैवहाहिक परिचय सम्मेलन में महात्मा जोतीराव फुले एवं सावित्री बाई फुले दम्पत्ति को भारत दिये जाने की सरकार से मांग की उन्होंने बच्चों को शिक्षित करने का आव्हान किया।

युवा अध्यक्ष राजकुमार सैनी ने आयोजन की रूपरेखा बताई। सर्वश्री इन्द्रसिंह ताराचन्द सैनी, जी.एल.सैनी, राजेश सैनी, रामसिंह सैनी, गुरनाम सिंह सैनी, नवनीत सैनी, आदि अतिथि थे । संचालन प्रदीप सैनी ने किया ।

● सारंगपुर (म.प्र.)– फूल माली समाज द्वारा आयोजित सामूहिक विवाह सम्मेलन। 1. 26/04/19 को कपिलेश्वर महादेव मंदिर प्रांगण–सारंगपुर । 2. 22/04/19 मेला ग्राउण्ड सुसनेर आगर। 3. 7/05/19 ग्राम जगदीशपुर (इस्लाम नगर) बेरसिया रोड़ भोपाल । 4. 7/05/19 नवीन धर्मशाला आगर मालवा। 5. 7/05/19 देवधाम कितलहेड़ा तह. लाड़पुरा कोटा (राज.) 6. 7/05/19 पार्वतीपुरम के पास बूँदी रोड़ कुन्हाड़ी कोटा (राज.) । 7. 7/05/19 ग्राम अरनेठा तह. के पाटन जिला बूंदी (राज.)। 8. 7/05/19 ग्राम गन्दीफली तह. लाड़पुरा जिला कोटा (राज.)। 9. 7/05/19 गोलडूंगरी सखराबाद वार्ड 45 टोंक (राज.) ।10. 7/05/19 धार (म.प्र.)। 11. 7/05/19 प्रताप पटेल माली गार्डन कन्नोद जिला देवास (म.प्र.)। 12. 12/05/19 टाँचा तहसील छीपाबड़ोद जिला बारा (राज.)। 13.15/05/19 माताजीलाल बाई का प्रांगण ग्राम देहित (राज.)। 14. 17/05/19 दुगारी तह. अंता जिला बारा (राज.)। 15.25/05/19 मण्डी बाल का खेत बस स्टेण्ड खिलचीपुर जिला राजगढ़ (म.प्र.)। सम्पर्क राधेश्याम पुष्पद पेन्टर बखेड़ (खुजनेर) जिला राजगढ़ (म.प्र.)। 9893691818।

● गंगापुरसिटी (राज.)– सावित्री बाई फुले महात्मा ज्योतिबा फुले सेवा समिति द्वारा 14/08/19 को सैनी धर्मशाला सूरसागर में शपथ ग्रहण समारोह। रामकेश सैनी ने निदेशक सैनी उच्च माध्यमिक शिक्षण संस्थान ने दी।

● मुम्बई (महा.)– श्रीमाली सेवा संघ द्वारा 17 वाँ वार्षिक स्नेह सम्मेलन वर–वधु सामूहिक विवाह 31 मार्च को गाला हाल पाठक स्कूल वाकोला (ब्रिज) सांताकूंज में उक्त जानकारी चंदनलाल शर्मा इलाहबाद ने दी ।

● अजमेर (राज.)– अर्न्तराष्ट्रीय महिला दिवस पर श्रीमती बीना कच्छावा को पश्चिम झोन की निबन्ध प्रतियोगिता में ''दैनिक जीवन में सोशल मीडिया के प्रभाव'' के लिए पुरस्कृत व सम्मानित होने पर बधाई।

● बालाघाट (म.प्र.)– 31 मार्च को जिला मरारमाली समाज की मिटिंग महात्मा ज्योतिबा फुले सांस्कृतिक भवन में रमेश नागेश्वर की अध्यक्षता में उक्त जानकारी नंदलाल मानेश्वर ने दी ।

● परबतसर (राज.)– महात्मा जोतीराव फुले जयंति 11 अप्रैल को फूल मालियान छात्रावास किशनगढ़ रोड़ में प्रतिभा सम्मान समारोह ।

● रूढ़की (उ.ख.)– अंजली सैनी ने ब्रोन्ज मेडल फूटबाल अबूधाबी में स्पेशल ओलम्पिक में जीतने पर बधाई ।

● कबीरधाम (छ.ग.) – श्रीमती दुलोटिन पटेल को सम्मानित होने पर बधाई।

● मध्यप्रदेश– 7 मई को श्री गुजराती रामी माली समाज उज्जैन, धार, देवास, हरसोला में सामूहिक विवाह समारोह पर बधाई ।

संकलन

रामलाल कच्छावा
कोषाध्यक्ष

नक्सल प्रभावी क्षेत्र में शिक्षा की अलख जगाते धर्मपाल सैनी

धार के 89 वर्षीय धर्मपाल 43 साल से नक्सल क्षेत्र में आदिवासी लड़कियों को पढ़ा रहे, खेल में भी 15 साल में 3 हजार नेशनल चैंपियन बना चुके हैं।

छत्तीसगढ़ के नक्सली इलाके बस्तर में 99 वर्षीय धर्मपाल सैनी 43 साल से आदिवासी लड़कियों को स्कूल तक लाने की मुहिम में जुटे हैं। इसके लिए उन्हें 1992 में पद्माश्री से भी नवाजा गया। लेकिन, फिर उन्हें लगा कि सिर्फ पढ़ाई से हालात नहीं सुधर सकते, इसलिए उन्होंने 2004 से लड़कियों के साथ लड़कों को भी खिलाड़ी बनाना शुरू कर दिया। नतीजतन 15 साल में अब तक 3 हजार खिलाड़ी नेशनल चैंपियन बन चुके हैं। एक हादसे में कंधे की हड्डियां टूटने और रीढ़ में गंभीर चोट के बावजूद धर्मपाल रोजाना खिलाड़ियों को ट्रेनिंग देते हैं। उनके साथ दौड़ लगाते हैं। एथलेक्सि, तीरंदाजी, कबड्डी और फुटबॉल सिखाते हैं। मूलतः मध्यप्रदेश के धार निवासी धर्मपाल 1951 में कॉलेज में एथलीट और वॉलीबॉल खिलाड़ी थे। जब वे 8वीं क्लास में थे, तब उन्होंने बस्तर की लड़कियों की बहादुरी की

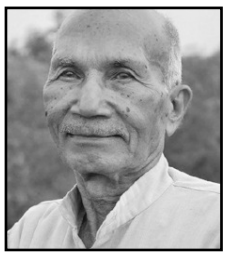

कहानियां पढ़ी। फिर ग्रेजुएशन पूरी करनके के बाद वे बस्तर आकर लड़कियों की शिक्षा पर काम करने लगे। 1976 में यहां दो आश्रम खोले गए। अब यहां 37 आश्रम हैं। इसमें 21 लड़कियों के है। सभी के लिए खेल जरूरी है इसीलिए मेडल आ रहे हैं।

यहां के बच्चे नेचुरल एथलीट, इंटरनेशनल मेडल भी जीतेंगे

यहां के सभी बच्चे मेहनती तो है ही, लेकिन खास बात यह है कि इन बच्चों में एथलेटिक्स का नेचुरल टैलेंट है। स्टेट और नेशनल गेम्स में यहां के खिलाड़ी चैंपियन बन रहे हैं। अगर एक अच्छी एकेडमी खोली जाती है तो यहां से हमें अच्छे इंटरनेशनल खिलाडी मिलने लगेंगे। यहां पर एकेडमी को लेकर प्रयास चल रहे हैं।